पटसन ज्योति

भा प नि

सितंबर 2020

पंचम अंक

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

The Jute Corporation of India Limited

15 अगस्त 2020 को प्रधान कार्यालय में राष्ट्रीय ध्वज उत्तोलन करते हुए श्री अजय कुमार जॉली, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक।

दिनांक 29 जनवरी 2020 को नराकास(उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री जगदीप धनखड़ जी से 'प्रोत्साहन पुरस्कार' प्राप्त करते हुए सर्वश्री ए. चक्रवर्ती, उप महाप्रबंधक(का.एवं प्रशा.) / विभागाध्यक्ष(राजभाषा) एवं रमेश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक(वित्त) / राजभाषा अधिकारी।

दिनांक 27 फरवरी 2020 को राजभाषा अकैडमी, दिल्ली से 'राजभाषा शील्ड' प्राप्त करते हुए सर्वश्री अजय कुमार जॉली, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, ए. चक्रवर्ती, उप महाप्रबंधक(का.एवं प्रशा.)/विभागाध्यक्ष(राजभाषा) एवं रमेश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक(वित्त)/राजभाषा अधिकारी।

संरक्षक

श्री अजय कुमार जॉली
अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक
एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भापनि, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मुख्य संपादक

श्री ए. चक्रवर्ती

संपादक मंडल

श्री अभिक साहा, कंपनी सचिव
श्रीमती संदीपा सेन दत्ता, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन)
श्री रमेश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त)
श्री जे. पी. के. मंडल, वरि. अनु. (हिं)

पत्राचार का पता

मुख्य संपादक

पटसन ज्योति, हिंदी अनुभाग
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड
15एन, नेली सेनगुप्ता सरणी, कोलकाता–700 087

(प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं एवं इसके लिए संपादक मंडल जिम्मेवार नहीं है)

पटसन ज्योति
(केवल आंतिरक परिचालन हेतु)

विषय सूची

कोविड-19 महामारी के दौरान एवं उसके उपरांत व्यापार की निरंतरता	4
स्वच्छता का महत्व	6
परिवार के स्तंभ	7
अहंकार का त्याग कैसे करें	8
मानव संसाधन प्रबंधक – सेवा प्रदाता के रूप में	9
दूध और पानी की मित्रता	10
कर्मों का फल	10
नीति–शास्त्र	11
जातक कथा	12
तवांग, एक खूबसूरत यात्रा	13
लॉकडाउन	14
कल्पना	14
कविता	15
संघर्ष	15

संदेश

मुझे प्रसन्नता हो रही है कि कोविड-19 महामारी से उत्पन्न विषम परिस्थितियों के बावजूद इस निगम की गृह हिंदी पत्रिका का पंचम अंक प्रकाशित हो रहा है। हमारा निगम, प्रधान कार्यालय के साथ-साथ अपने क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा संबंधी नीतियों एवं नियमों का अनुपालन करने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न कर रहा है। निगम में नियमत रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें, हिंदी कार्यशालाएं, तिमाही हिंदी प्रतियोगिताएं, प्रदर्शनी बोर्ड पर आज का शब्द, हिंदी संगोष्ठियां आदि के आयोजन किये जाते हैं ताकि कार्मिकों का राजभाषा में कार्यालयीन कार्य करने का रुझान बना रहे। इसके अलावा राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार योजना भी प्रारंभ की गई है।

हमारे निगम में राजभाषा के उपयोग के प्रोत्साहन के लिए हम सभी को सतत् प्रयास करने की आवश्यकता है। इस वर्ष, विशेषकर कोविड-19 के होते हुए भी संगोष्ठियों व कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया गया। यह बड़े गर्व व हर्ष की बात है। इसके लिए राजभाषा विभाग के अधिकारीगण/कर्मचारीगण व समिति के सदस्यगणों को विशेष धन्यवाद। मेरी इस पत्रिका में प्रकाशित हिंदी लेख के सभी लेखकों को शुभकामनाएं एवं इस पत्रिका की सफलता के लिए भी शुभकामनाएं।

अजय कुमार जॉली

अजय कुमार जॉली

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संपादकीय

हमें खुशी हो रही है कि अपने देश में कोरोना वायरस संक्रमण फैलने के बावजूद हम नियत समय पर निगम की गृह हिंदी पत्रिका के पंचम अंक प्रकाशित करने में सफल रहे। यह श्रेय हमारे उन सभी कार्मिकों को जाता है जिन्होंने इस कठिन परिस्थितियों में भी राजभाषा हिंदी के प्रति अपना बखूबी उत्तरदायित्व निभाए हैं।

जैसाकि हमसब जानते हैं भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के मार्ग-दर्शन के अनुसार हमें कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में करना है। हमने राजभाषा के नीतियों एवं नियमों का अनुपालन करने का अनवरत चेष्टा किया है एवं समय-समय पर अपने कार्मिकों को राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जिसके परिणामस्वरूप निगम को नराकास (उपक्रम) कोलकाता एवं अन्य संगठनों द्वारा राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए पुरस्कृत किया गया है।

हम उम्मीद करते हैं कि आपसबों को इस पत्रिका में समाविष्ट विभिन्न विषयों से संबंधित हिंदी लेख पसंद आयेंगे एवं राजभाषा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

ए. चक्रवर्ती
मुख्य संपादक

कोविड-19 महामारी के दौरान एवं उसके उपरांत व्यापार की निरंतरता

परिचय

कोविड-19 महामारी के प्रकोप को रोकने के लिए राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन हुआ जिसके कारण निगम के व्यवसायिक क्रिया-कलाप के साथ-साथ पूरे देश पर प्रभाव पड़ा। लेकिन निगम ने संतुलित एवं संगठित तरीके से विषाक्त कीटाणु की चुनौती का जवाब दिया। अभी तक कर्मचारियों के बीच कोविड-19 की घटना नाममात्र है। निगम ने अपना कार्य एक साथ किया और तुरंत सुरक्षा संबंधी उपायों को अपनाया जिसमें कार्य करने का वैकल्पिक तरीका शामिल है। दर असल नेतृत्व करने वाली टीम ने प्रथम दिन से ही परस्पर संवाद प्रारंभ कर दिया और क्रिया-कलाप वैकल्पिक तरीके से पुन: प्रारंभ हो गया। घर से काम करने के लिए एक व्यापक योजना बनाई गई एवं उसी को मूल रूप से निष्पादित किया गया। पहली बार बोर्ड की बैठक वर्चुअल तरीके से आयोजित की गई। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद कोविड-19 की घटना को आत्मनिरीक्षण करने एवं व्यापार नीतियों एवं प्रक्रियाओं को और बेहतर करने के लिए सुअवसर के रूप में लिया गया।

सुरक्षा के उपाय

निगम ने विभिन्न सुरक्षा के उपायों को लागू किया है एवं प्रत्येक कर्मचारी को आरोग्य सेतु ऐप इंस्टॉल करने का निदेश दिया गया। कर्मचारियों के लिए उनके घरों से आने-जाने हेतु सेनिटाइज किये हुए कार्यालयीन वाहनों की व्यवस्था की गई थी। अस्वस्थ कर्मचारियों को घर से कार्य करने की सलाह दी गई। सभी फील्ड ऑफिस एवं प्रधान कार्यालय के कर्मचारियों को सलाह दी गई है कि वे हर समय सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखें एवं सभी सेनिटाइजेशन प्रोटोकॉल निर्धारित किए गए हैं और उसका सख्ती से पालन किया जा रहा है।

प्रमाणित जूट बीज का वितरण

रास्ते में पड़ने वाली पहली चुनौती लॉकडाउन की शुरुआत के दौरान देश के जूट उगाही वाले राज्यों में बीज वितरण था। प्रमाणित जूट बीज के वितरण में एक बहुत ही संकीर्ण रास्ता है एवं इस वर्ष लॉकडाउन के शुरूआती सप्ताह के साथ मेल खाता है एवं यह मध्य मार्च से लेकर अप्रैल के अंत तक का समय था। सभी आवश्यक दिशा-निदेशों का अनुपालन करते हुए बीज के वितरण के लिए कोविद-19 के प्रोटोकॉल विकसित किये गये एवं उसे संबंधित क्षेत्रों में वितरित किये गये। भारतीय पटसन निगम लि. के टीम ने रिमोट कंट्रोल मोड में कार्रवाई की, जूट उगाही वाले क्षेत्रों में सभी स्थानीय प्राधिकारियों को छूट के लिए पत्र भेजे गए एवं फील्ड के कर्मचारियों ने 100% वितरण करना सुनिश्चित किया जो विगत वर्ष की तुलना में 10-15% अधिक था। अगले मौसम के लिए बीज व्यापार का वाणिज्यिक मॉडल पर कार्य किया जा रहा है।

प्रलेखन और एसओपी

कोविद-19 की परिस्थिति ने निर्धारित कार्य पर फिर से विचार करने के लिए मजबूर किया और नेतृत्व करने वाली टीम ने निर्णय लिया कि यह आवश्यक एसओपी एवं अन्य दस्तावेज़ीकरण का मसौदा तैयार करने का एक सुनहरा अवसर है जो वर्तमान में नहीं था। इस दिशा में पहला कदम परिचालन नियमावली बनाना था। मसौदा पैनी नजर से तैयार किया गया एवं परिचालन विभाग के प्रत्येक पहलू को कवर किया गया। जूट निरीक्षण कार्य में प्रशिक्षुओं को नियुक्त करने का निर्णय दूसरा प्रमुख निर्णय था। अभी यह द इंडियन अपरेंटिसशिप एक्ट के अंतर्गत आने वाले व्यवसायों में से एक भी नहीं था और इसलिए यह अन्य श्रेणी में गिना गया। जेसीआई के टीम एक साथ रहा एवं जूट निरीक्षण कार्य के लिए पाठ्यक्रम को बहुत कम समय में तैयार किया गया एवं निगम ने प्रशिक्षुओं के प्रवेश के लिए उपयुक्त प्राधिकारी के साथ पंजीकृत किया। वित्त और आईटी परिचालन नियमावली भी कतार में है। खरीद के तौर-तरीके के अलावा इस वर्ष विभागीय क्रय केंद्रों पर क्रय का संचालन करने के लिए कोविद-19 के प्रोटोकॉल का मसौदा भी तैयार किया गया एवं इसे सक्षम प्राधिकारी का अनुमोदन होने के उपरांत परिचालित किया गया।

दिन-प्रतिदिन के कार्य

लॉकडाउन के दौरान एवं उसके बाद प्रधान कार्यालय के कर्मचारियों की उपस्थिति को परम आवश्यकताओं के आधार पर साप्ताहिक रोस्टर के हिसाब से नियंत्रित किया गया। लॉकडाउन के पहले दिन से निगम के कर्मचारीगण अपने घरों से नियमित आधार पर विभाग के क्रिया-कलापों की निगरानी और कार्य-निष्पादन कर रहे हैं एवं वर्चुअल कंफरेंस व अन्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से निरंतर संवाद कर रहे हैं। सभी आंतरिक बैठकें एवं बाहरी एजेंसियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकें वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई एवं अभी भी की जा रही हैं। सभी क्षेत्रीय कार्यालयों एवं विभागीय क्रय केंद्रों को कवर किया गया था और फील्ड के टीम ने जूट फसल के रिपोर्ट एवं उसके आगमन के रिपोर्ट को तत्परता से प्रस्तुत करता रहा। निगम ने MSME विक्रेताओं पर विशेष जोर देने के साथ-साथ अपने सभी आपूर्तिकर्ताओं और विक्रेताओं के बकाये बिलों का समय पर भुगतान करना सुनिश्चित किया। बोर्ड के सदस्य के साथ-साथ सभी कर्मचारियों को पूर्ण वेतन दिया गया। सचेत नीतिगत निर्णय के रूप में गैर-नियमित कर्मचारियों में से किसी को भी नहीं निकाला गया।

अध्ययन और विकास

जेसीआई के पूरे कर्मचारियों को ऑनलाइन पाठ्यक्रमों हेतु नामांकन करने के लिए प्रेरित किया गया एवं अधिकांश कार्मिकगण उपलब्ध कई पाठ्यक्रमों से लाभान्वित हुए जिसमें वे कार्मिकगण शामिल हैं जिन्होंने आईआईएम, बैंगलोर के माध्यम से भी प्रशिक्षण प्राप्त किये हैं। न्यूनतम लागत पर यह उपाय कर्मचारियों के ज्ञान, कौशल और मनोभाव पर एक बड़ा प्रभाव डाल रहा है। परिचालन टीम के अधिकतम सदस्यगण गूगल प्रमाणित डिजिटल विपणन विशेषज्ञ हैं। कुछ ने व्यावसायिक संचार, जीएसटी, एचआर, फेसबुक, मार्केटिंग, एनालिटिक्स एवं यहां तक कि ग्राहक संबंध प्रबंधन में ऑनलाइन पाठ्यक्रम किए हैं। बाहरी विशेषज्ञ द्वारा 'mindfulness' (सचेतन) पर एक मेगा ऑनलाइन सत्र आयोजित किया गया था। अथक वर्चुअल बैठकों के परिणामस्वरूप विशेष रूप से डिजिटल मीडिया में सभी कर्मचारियों की प्रस्तुतीकरण कौशल कई गुणा बढ़ गई।

न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) क्रिया-कलाप

फसल वर्ष 2020-21 के लिए एमएसपी की दरें पहले ही भारत सरकार द्वारा घोषित की जा चुकी हैं और निगम की एमएसपी संबंधी तैयारियाँ जोरों पर हैं। चूंकि स्थिति धीरे-धीरे सामान्य होने की ओर अग्रसर है इसलिए जूट कृषकों द्वारा एमएसपी का प्रस्ताव आने की संभावना है। निगम के क्रय केंद्र इसके लिए तैयार हैं। इसमें बड़े पैमाने पर तैयारी शामिल है जिसमें एमएसपी दरों के लिए हितधारकों की बैठक एवं प्रधान कार्यालय से सभी फील्ड कार्यालयों को जानकारी, डीपीसी में खरीद के लिए कोविद-19 संबंधी सुरक्षा प्रोटोकॉल, बड़े पैमाने पर प्रचार, गोदामों की तैयारी, उपकरण और प्रलेखन, फसल उत्पादन के आकलन हेतु फील्ड सर्वेक्षण एवं संभावित एमएसपी पर जूट के आगमन का आकलन, खरीद मॉडलिटी दस्तावेज व प्रधान कार्यालय के साथ सभी क्षेत्रीय कार्यालयों की बैठक शामिल हैं।

विविध जूट का व्यवसाय

जेसीआई के जेडीपी का व्यवसाय विगत वित्त वर्ष में लगभग 350% बढ़ गया। इसने लॉकडाउन के दौरान बहुत आवश्यक आवेग प्राप्त किया है जैसाकि इसके नीचे दर्शाया गया है:

(ए) **फ्रेंचाइज़ चैनल:** जेसीआई ने फोफो (FOFO) मोड में परिचालन के फ्रैंचाइज़ चैनल हेतु प्रक्रिया शुरू की है।

(बी) **ई-कॉमर्स:** निगम ने शीघ्र ही अपना ई-कॉमर्स पोर्टल शुरू करने की तैयारी पूरी कर ली।

(सी) **जूट जियो-टेक्सटाइल्स:** JGT एक अन्य क्षेत्र है जिसमें निगम ने कदम रखा है एवं नियमित आदेश प्राप्त की गई हैं।

(डी) **टीटीडी में जूट के बैग:** तिरुपति में प्रसादम् के वितरण के लिए जूट बैग मंदिर के दरवाजे खुलते ही पूरे जोश के साथ शुरू हो जाएगी।

परियोजना आई-केयर का कार्यान्वयन

जेसीआई परियोजना आई-केयर की कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में इस महामारी की प्रारंभिक अवधि में गंभीर बाधाओं के साथ आया था। तथापि कठिनाइयों को दूर करने के लिए निगम को विभिन्न राज्य के प्रशासनों से सहायता किया गया था। 2.55 लाख किसानों को लाभ प्रदान करने के लिए इस परियोजना के अंतर्गत कवर किये गये सभी जूट उगाही राज्यों के 41 जिलों और 153 ब्लॉक में लगभग 1.06 लाख हेक्टेयर भूमि कवर किया गया। पंजीकृत किसानों के बीच लगभग 603 मैट्रिक टन प्रमाणित जूट बीज, 600 बीज ड्रिल मशीन एवं 900 साइकिल वीडर मशीन वितरित की गई हैं।

अन्य क्रिया-कलाप

निगम ने विभिन्न प्रकार के अन्य क्रिया-कलापें की हैं जैसाकि नीचे दर्शाया गया है:

(ए) जेसीआई ट्रेडमार्क के लिए पंजीकरण प्रक्रिया।

(बी) डीपीसी की सुरक्षा उपायों के लिए GeM पोर्टल के माध्यम से आधुनिक अग्निशामक यंत्रों की खरीद।

(सी) प्रधान कार्यालय को नए परिसर में स्थानांतरित करने के लिए दिशा-निदेश का दस्तावेज़ीकरण शुरू किया गया है।

(डी) प्रशिक्षुओं को लेने के लिए प्रशिक्षुता पोर्टल में निगम का स्थापना पंजीकरण शुरू किया गया है।

(ई) नई भर्ती के लिए प्रक्रिया शुरू की गई है।

निष्कर्ष

अंत में, यह जोर के साथ कहा जा सकता है कि प्रचलित कोविद-19 के परिदृश्य के बीच निगम ने न केवल चीजों को अलग-अलग किया बल्कि इसने अलग-अलग चीजें भी कीं। काम करने का डिजिटल तरीका एक नया मानक बन गया एवं दस्तावेज़ीकरण में सभी खाली स्थान को विवेकपूर्ण तरीके से भरे गए। डिजिटल मीडिया को लागू करने से विज्ञापन की लागत न्यूनतम स्तर तक पहुंच गई एवं ऑनलाइन बैठकें की गई व यात्रा की लागत को न्यूनतम तक ले आई। कर्मचारियों ने ऑनलाइन प्रशिक्षण के माध्यम से नए कौशल हासिल किए एवं वे अब उत्साहित व्यक्तियों का एक दल है। कोविद-19 की मुसीबतों के बावजूद निगम ने उत्कृष्टता एवं अपने कर्मचारियों की अदम्य साहस के लिए अपने अनवरत खोज के साथ अपना झंडा ऊंचा रखा।

अनिंद्य मजूमदार

वरिष्ठ प्रबंधक(आईपीसी), प्रधान कार्यालय

स्वच्छता का महत्व

स्वच्छता एक उपयुक्त आदत है, इससे हमें अच्छे स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन प्राप्त होता है। ये हमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से प्रगति दिलाता है। स्वच्छता से सकारात्मक चिंतन और भावनाएं आती है और ये हमें प्रकृति से जुड़ने मे मदद करता है। जो लोग स्वच्छता नहीं अपनाते वे आमतौर पर शारीरिक समस्याएं, मानसिक चिंता, बिमारियां, नकारात्मक भावनाओं के वजह से परेशान रहते हैं। स्वच्छता शरीर, मन और आत्मा को संतुलित बनाए रखने में मदद करता है। स्वच्छता को अपने दिनचर्या में शामिल करने से हम इसकी उपलब्धि कर सकते है। स्वयं में बदलाव लाना होगा। अत: इसकी आशा हम दूसरों से नहीं कर सकते। स्वच्छता के लिए जागरुक्ता घरों, स्कूल व कॉलेजों, संस्थानों, कार्यालयों में आवश्यक है, इसका संदेश फैलाने से ही ये क्रांति भारत में आ पायेगी। हमारा देश हमारा सम्मान है, हमारा पहचान है। हमने पश्चिमी देशों के कई चीजों को अपनाया, मगर स्वच्छता से संबंधित शिष्टाचार और आदतों को नहीं अपनाया। अगर देश का

हर नागरिक स्वच्छता की प्रतिज्ञा ले तो यह स्वच्छ भारत का सपना जरुर सच होगा। हमारा भविष्य हमारे हाथों में है। स्वच्छता का प्रचार कई सामाजिक सुधारकों जैसे महात्मा गांधी, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सामाजिक कानून, स्वच्छता कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान, हर घर में शौचालय बनाना आदि के माध्यमों से किया है। स्वच्छता ईश्वर का मार्ग है।

"स्वच्छता है तो स्वस्थ है, स्वस्थ है तो समृद्धि है।
स्वच्छता का दीप जलाएंगे, पूरे जगत में उजियाला फैलाएगें।।"

स्वच्छ भारत, सूदंर भारत, जय हिंद।

प्रियंका महंती
प्रबंधक (वित्त), प्र. का., कोलकाता

परिवार के स्तंभ

प्राचीन समय में पुरुष समाज में जब कोई सफलता प्राप्त करता था तो कहा जाता था 'हर सफल पुरुष के पीछे किसी महिला का हाथ होता है' तब से आज तक यह कहावत बहुत प्रचलित है। लेकिन वर्तमान समय में पुरूषों के साथ-साथ महिलाओं द्वारा नित नई प्राप्त की जाने वाली सफलता को देखते हुए क्या यह नहीं कहा जा सकता है या ये कहना उचित नहीं होगा कि 'हर सफल महिला के पीछे किसी पुरूष का हाथ होता है।'

परिभाषाएं धीरे-धीरे बदल रही हैं। संकुचित सोच अब विस्तृत आसमान ढूंढ़ रही है। खुद को पीछे रखकर अपने साथी को आगे बढ़ाने का उत्साह अब केवल महिलाओं तक ही सीमित नहीं। पुरूष भी सहयोग और समर्पण से महिलाओं के विकास में नई भागीदारी तय कर रहे हैं। भारत के लोगों ने जिस तरह महिलाओं को लेकर अपनी सोच को अधोगामी बनाया, उस सोच के दायरे से बाहर निकल कर एक सकारात्मक परिवर्तन यदि हमें दिखाई दे रहा है तो उसके पीछे पुरूषों की मानसिकता में समय के साथ-साथ परिवर्तन नहीं होता तो महिलाएं आज घर की चारदीवारी में ही कैद रहती तथा उनके लिए घर से बाहर निकलकर काम करना बेहद मुश्किल होता। आज जब हम अपने परिवार में और समाज में बहू, बेटियों व महिलाओं को आगे बढ़ते हुए देखते हैं तो एकाएक ही मस्तिष्क में बात आती है कि इस बदलते परिवेश तथा महिलाओं के बदलते जीवन के पीछे एक पुरुष का ही योगदान है फिर वह पुरुष चाहे एक पिता के रूप में, भाई, पति या एक मित्र के रूप में भी हो सकता है। पुरूष ही महिलाओं का उत्साहवर्धन कर उन्हें आगे बढ़ने में सहयोग दे रहे हैं। वे हर परेशानी और कठिनाई में उनके साथ खड़े हैं इसलिए आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी सफलता का परचम लहरा रही है।

हमें इस बात को मानने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए कि समाज के परंपरागत रिवाजों को तोड़कर पुरूष ने ही महिलाओं को यह अहसास करवाया कि जो हम कर सकते हैं, वह तुम भी कर सकती हो।

यह सच है कि हमने अपने दैनिक जीवन में बहुत बार सुना है कि पुरूष की सफलता के पीछे नारी का हाथ होता है लेकिन यह हमारे मुद्दे का सिर्फ एक पहलू है। आज भी हम परंपरावादी व रूढ़ीवादी विचारों के कारण इस मुद्दे के दूसरे पहलू की ओर ध्यान नहीं दे पाते या उस ओर ध्यान

देना ही नहीं चाहते। वास्तविकता यह है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज व परिवार के साथ रहकर ही वह सफलता प्राप्त कर सकता है। जीवन में कोई भी अकेला सफल नहीं होता है। इंसान पैदा होने से लेकर बढ़ने में और फिर सफल होने में कई लोगों का हाथ रहता है। इसलिए यदि हम किसी पुरूष से पूछे तो वह अपनी मां या संगिनी का नाम लेंगे और यदि हम किसी महिला से पूछे तो वह अपने पिता, स्वामी को खुद की प्रेरणा या सफलता पर पहुंचने का अह्म हिस्सा बताएंगे।

आजकल महिलाएं हर चीज में पुरूषों के बराबर है। वे समाज में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। पहले महिलाएं घर की चारदीवारी के अंदर ही रहती थी लेकिन आजकल महिलाएं हर कार्यक्षेत्र में काम करती हुई दिख जाती है। महिलाओं के जीवन में आने वाले बदलाव के पीछे पुरूषों की सोच तथा मानसिकता की एक अह्म भूमिका है। पुरूषों की मानसिकता नहीं बदली होती तो महिलाओं का घर से बाहर निकलना, अपनी व्यक्तिगत पहचान को समाज में प्रतिस्थापित करना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन होता। अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि –

प्रत्येक देश के दो पंख होते हैं –
एक महिला तथा दूसरा पुरूष,
देश की उन्नति एक पंख से
उड़ान भरने पर नहीं हो सकती है।

अर्चना भंसाली
पति – श्री बी. एन. भंसाली,
वरिष्ठ प्रबंधक(परि./विप.), प्र. का., कोलकाता

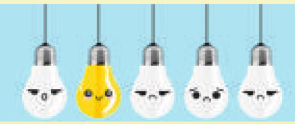

अहंकार का त्याग कैसे करें

अहंकार मानव का सबसे बड़ा दुश्मन है। अगर मानव को अहंकार नहीं होता तो वो कभी भी गलत रास्ते पर नहीं जाता और उसका पतन नहीं होता।

अहंकार किसी भी तरह का हो वो उसको खा जाता है, जीवन में जो लोग इसका त्याग कर देते हैं वही लोग आगे चलकर एक महान व्यक्ति बन पाते हैं। रावण के पास किसी भी चीज की कमी नहीं थी, वह बहुत बड़ा पंडित भी था लेकिन अहंकार ने उसका और पूरे लंका का विनाश कर दिया। अगर रावण अहंकार का त्याग कर राम से माफी भी मांग लेता तो शायद श्री राम जी उसको माफ़ कर देते और लंका का विनाश रुक जाता। इंसान कभी–कभी तो इतना अहंकार करने लगता है कि उसको खुद में भगवान नजर आने लगता है और वह खुद को भगवान समझने लगता है।

दुर्योधन भी अहंकार का ही मारा था, अगर उसने अपना अहंकार छोड़ कर सब्र से काम लिये होते तो शायद वह जिन्दा बच जाता और इतना बड़ा महाभारत नहीं होता। आज तक जिन–जिन लोगों ने अहंकार को अपनी शक्ति बनाकर उपयोग किया है उनका पतन ही हुआ है। इंसान जब छोटा होता है तब उसकी इच्छा बहुत ही कम होती है और जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है उसकी इच्छा और ज्यादा बढ़ती जाती है और एक दिन वह इतना धन कमा लेता है कि अहंकार का शिकार हो जाता है। हम सब मानव हैं, हम लोगों का कुछ भी यहाँ नहीं है और सब कुछ भगवान का दिया हुआ है तो दूसरे के चीजों को बर्बाद कर देना अच्छी बात नहीं है। जबतक हमलोग अपने अंदर से अहंकार को हमेशा के लिए ख़त्म नहीं कर देंगे तबतक हम अपने आपको एक अच्छा मानव नहीं बोल सकते हैं।

जब हम अपने अहंकार को छोड़ देते हैं तो हम अपने पेशेवर जीवन में दिन–प्रतिदिन के कार्यों में अधिक सकारात्मक सोच रखेंगे, जो संगठनात्मक विकास में भी प्रभाव डालेंगे।

अनिक कुमार दे

आंचलिक प्रबंधक(उत्तर–पूर्व), आं.का. –गुवाहाटी

मानव संसाधन प्रबंधक – सेवा प्रदाता के रूप में
(HR Manager – As Service Provider)

मेरा मानना है कि यदि प्राथमिकता ग्राहकों की संतुष्टि है और उत्पादों की मार्केटिंग ग्राहक की मूलभूत आवश्यकता के अनुरूप हो तो सभी व्यवसाय फलते–फूलते और लाभदायक बने रहते हैं। मानव संसाधन प्रबंधन(HRM) के तरीके संगठन के लक्ष्य के प्रति नैतिकतापूर्ण (Ethical) और कर्मचारियों की बुनियादी जरूरतों (basic needs) को पूरा करने वाला होना चाहिए, जैसे कि एक स्टोर मैनेजर ग्राहक को भगवान के तरह समझता है और उसके लिए एक अच्छा वातावरण बनाने का कोशिश करता है। मानव संसाधन प्रबंधक का विचार भी कर्मचारियों के प्रति ऐसा ही होना चाहिए, जैसे कि कार्य स्थल अच्छा होना, उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाना, वर्क लाइफ बैलेंस को बढ़ावा देने वाला एक घरेलू वातावरण, उनके आत्म सम्मान का रक्षा करना, कर्मचारियों की क्षमता को जानना और कर्मचारियों की बेहतरी के लिए वचनबद्ध होना।

जैसे कस्टमर अवेयर्नेस प्रोग्राम ग्राहक को स्थायी रूप से बनाने के लिए कारगर होता है, मानव संसाधन प्रबंधकों को भी जागरूकता कार्यक्रम की दिशा में काम करना चाहिए और इससे संगठन में सभी का इंट्रेस्ट बढ़ेगा और इससे उस संगठन में एम्प्लोयी रिटेंशन की प्रतिशतता बढ़ेगी। दूकानदार नरमी से बात करते हैं और कंपनी को बिना किसी नुकसान के साथ कस्टमर को सभी ऑफर्स के बारे में बताते हैं, उसी तरह मानव संसाधन प्रबंधकों को भी कर्मचारियों को उनके सभी एंटाइटलमेंट के बारे में समय–समय पर बताना चाहिए और अंत में एक छोटा मुस्कान कर्मचारी को बड़ा मुस्कान देगा।

एक कर्मचारी को सुनना उतना ही चुनौतीपूर्ण है जितना कि एक ग्राहक को। किसी कर्मचारी को मदद की दृष्टि से सुनना कर्मचारी के दिमाग पर छाप छोड़ सकता है। जैसे कि सेवा में सुधार के लिए कस्टमर फीडबैक जरुरी है, उसी तरह सेवानिवृत होने वाले कर्मचारी से एग्जिट इंटरव्यू के दौरान फीडबैक भी सेवा को बेहतर बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

अब व्यापार को बढ़ाने और कस्टमर से जुड़ने के लिए टेक्नोलॉजी का प्रयोग जरुरी हो गया है, उसी तरह मानव संसाधन प्रबंधक को भावनात्मक और नैतिक रूप से सभी कर्मचारियों से जुड़ा होना चाहिए और एक परिवार की तरह व्यक्तिगत मुद्दों पर भी चर्चा करना सामान्य होना चाहिए।

सेवा प्रदान करने में प्रतिस्पर्धा दोनों ही मामलों में आवश्यक है। मदद करने वाला और दिल को छूने वाला कम्युनिकेशन, विक्रताओं के आकर्षण का प्रमुख कारक है और मानव संसाधन प्रबंधक का अनुभवी संचार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) के साथ संबंधों को मजबूत बनाएगा और इसके परिणामस्वरूप लक्ष्य की प्राप्ति होगी और संगठन के विज़न स्टेटमेंट को पूरा किया जा सकेगा।
यह सोच कर चलना कि सभी ग्राहक अच्छे और योग्य हैं, व्यापार की मात्रा को बढ़ता है, कर्मचारी के लिए यह दूरदर्शिता प्रशासनिक प्रबंधन जैसे कि योजना, आयोजन, स्टाफिंग, निर्देशन, कोऑर्डिनेटिंग, भर्ती, बजट, मैनेजिंग दी चेंज के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।
मैं एक सेवा प्रदाता हू, क्या आप हैं?

चंद्रकांत चौधरी

सहायक प्रबंधक (मा.सं), क्षे.का.–गुवाहाटी

दूध और पानी की मित्रता

पानी ने दूध से मित्रता की और उसमें समा गया। जब दूध ने पानी का समर्पण देखा तो उसने कहा – मित्र, तुमने अपने स्वरुप का त्याग कर मेरे स्वरुप को धारण किया है। अब में भी मित्रता निभाऊँगा और तुम्हें अपने मोल बिकवाऊँगा।

दूध बिकने के बाद जब उसे उबाला जाता है, तब पानी कहता है – अब मेरी बारी है, मैं भी मित्रता निभाऊंगा और तुमसे पहले मैं चला जाऊँगा और दूध से पहले पानी उड़ता जाता है।

जब दूध अपने मित्र को अलग होते देखता है तो उफन–उफन कर गिरता है और आग को बुझाने की कोशिश करता है। जब पानी की बूंदें उस पर छींट कर उसे अपने मित्र मे मिलाया जाता है तब वह फिर शांत होने लगता है।

पर, इस अगाध प्रेम में थोड़ा-सा खटास (नींबू की दो-चार बूंदें) डाल दी जाए तो दूध और पानी दोनों अलग हो जाते हैं।

थोड़ा-सा भी मन का खटास अट्टू प्रेम को भी मिटा सकता है।

कर्मों का फल

1. एक आदमी गुस्से में अपने कर्मचारी को एक थप्पड़ मार देता है, पता नहीं उसे किस बात पर गुस्सा आया था। कर्मचारी उसी के यहां नौकरी करता था इसलिए बेचारा कुछ नहीं कर पाया। वह कर्मचारी जब अपने घर गया तो सारा गुस्सा अपनी पत्नी पर निकाल दिया। अब पत्नी बेचारी क्या करती। गुस्सा तो उसे भी बहुत आया तो उसने अपने बड़े बेटे को एक चॉटा मार दिया। अब बड़ा बेटा अपना गुस्सा न तो मां पर निकाल सकता था ना ही बाप पर। पास में ही उसका छोटा भाई बैठा था, बस वही उसके गुस्सा का शिकार हो गया। अब छोटे भाई से छोटा घर में कोई नही था जिस पर वह गुस्सा निकाल सके। वह गुस्से में घर से बाहर चला गया। बाहर में एक कुत्ता बैठा था तो उसने कुत्ते को ही लात मार कर अपने गुस्से को शांत किया। लात खाने के बाद कुत्ता वहाँ से भागा और उसने एक आदमी के पैर में काट लिया। जिसे कुत्ते ने काटा, वह वही आदमी था जिसने कर्मचारी को थप्पड़ मारा था।

मतलब, एक थप्पड़ भी किसी को गलत मारा तो कर्मफल तो भोगना ही पड़ेगा।

2. आँख ने एक फल देखा तो मन में लालसा हुई। अब आँख तो फल तोड़ने जा नहीं सकता तो उसे तोड़ने के लिए पैर गए। अब पैर तो वहाँ पहुँच गया पर वह तो फल तोड़ नहीं सकता इसलिए फल तोड़ा हाथ ने। मतलब, जिसने देखा वह गया नहीं, जो गया उसने तोड़ा नहीं, जिसने तोड़ा उसने खाया नहीं और जिसने खाया उसने रखा नहीं, मतलब चला गया पेट में और थोड़ी देर बाद जब माली ने देखा तो डंडे लगे पीठ को। पीठ ने बोला – हाय! मेरा क्या कसूर था। लेकिन जब डंडे लगे पीठ को तो आंसू निकले आंख से, क्योंकि देखा तो उसी ने था।

मतलब, कर्मफल तो भोगना ही पड़ेगा, इससे कोई नहीं बच सकता।

3. यह एक सच्ची घटना है जो 1893 में अमेरिका में घटित हुई थी। एक लड़का अपनी प्रेमिका के साथ रहता था। बाद में उसने अपनी प्रेमिका को छोड़ दिया। जब वो लड़की अपने घर गई तो उसने अपनी आपबीती अपने भाई को बताई। यह सब सुनकर उसके भाई को बहुत गुस्सा आया। वह गुस्से में उस लड़के के घर गया और उसे गोली मार दी। गोली लगते ही वह लड़का वहीं पर गिर गया लेकिन गोली उसे लगी नही थी बल्कि उसे छुते हुए निकल गई और पीछे के एक पेड़ में जाकर धंस गई। लड़के के गिरते ही, लड़की के भाई को लगा कि वह मर गया है तो फिर उसने खुद को गोली मार ली और वहीं मर गया। जब उस लड़की को पता चला कि उसका भाई मर गया है तो उसने भी अपने आपको गोली मार ली और वह भी मर गई।

अब स्थिति यह थी कि भाई और बहन तो मर गए लेकिन वह लड़का बच गया और उसकी जिन्दगी सामान्य रुप से चलने लगी। अब इस घटना के बीस साल गुजर चुके थे, यानी बीस साल बाद जब वह अपने घर का निर्माण कर रहा धा तो उसे फर्नीचर के लिए लकड़ी की जरुरत पड़ी तो उसने सोचा कि जब घर में ही इतना बड़ा पेड़ है तो बाहर जाने की क्या जरुरत है, क्यों न इसी पेड़ को काटकर फर्नीचर के लिए लकड़ियाँ निकाल लूं और वो गोली बीस साल पहले इसी में धंसी थी। पेड़ काफी विशाल था तो उसने विस्फोट कर उस पूरे वृक्ष को उखाड़ने की सोची। उसमें जैसे ही विस्फोट किया, वह गोली जो बीस साल पहले इस पेड़ में धंसी थी, सीधे उसके सिर के बीचों-बीच आकर लगी और तत्काल ही उसकी मृत्यु हो गई।

मतलब, कर्मफल तो भोगना ही पड़ता है चाहे आज, कल या परसों।

नीति–शास्त्र (Ethics)

1) एक व्यक्ति अपने घर गया और अपनी माँ से बोला कि आज एक दुविधा में हूं, माँ। तो माँ ने पूछा-क्या हुआ? तो वह बोला कि माँ, आज एक ऐसा काम करने के लिए बोला गया है जिसमें पैसे तो बहुत हैं लेकिन मन गवाही नहीं देता है उस काम को करने के लिए। मां ने बोला – बेटा, मैं इतनी पढ़ी-लिखी तो हूं नहीं कि तुम्हें सलाह दे सकूं। लेकिन हां एक बात तो जानती हूं कि रोज सुबह जब मैं तुम्हारे कमरे में तुझे जगाने जाती हूं तो तु बहुत आराम की नींद सो रहा होता है। कभी ऐेसा न हो कि मैं किसी दिन तुझे जगाने आऊँ और तु जागता मिले। बाकी तु समझदार है, मां बोलकर चली गई। बेटा बोला – मां, मुझे मेरा जवाब मिल गया।

निष्कर्ष – कभी भी हमें अपने जीवन में अनैतिक (un-ethical) कार्यों में संलिप्त नहीं होना चाहिए।

2) एकबार राजा जनक और महर्षि याज्ञबल्वभ जी की आपस में बात चल रही थी। राजा जनक महर्षि से पूछते हैं कि आदमी किसकी रोशनी से देखता है तो महर्षि बोले – राजन, ये तो छोटी-सी बात पूछी है आपने। आदमी सूरज की रोशनी से देखता है तो राजा बोले – यदि सूरज अस्त हो फिर। तो महर्षि बोले– फिर आदमी चाँद की रोशनी से देखता है। फिर राजा ने पूछे – महर्षि, यदि अंधेरे से भरी अमावस की रात हो, फिर। तब महर्षि बोले – फिर आदमी आवाज की दृष्टि से देखता है। राजा बोले – आवाज की दृष्टि से! महर्षि बोले – हाँ, तुम किसी वन में भटक जाओ, घनघोर अंधेरा हो और कहीं दूर से कोई आवाज देकर तुम्हें पुकारे तो तुम वहां जाओगे कि नहीं जाओगे। अर्थात् आवाज से दिखाई तो नहीं देगा पर मालूम चल जाएगा कि कहाँ जाना है। राजा फिर बोले – अगर कोई आवाज भी न हो अर्थात् सूरज भी ना हो, चाँद भी ना हो, तारे भी ना हो और आवाज भी ना हो तो फिर आदमी किसकी दृष्टि से देखेगा। तो महर्षि बोले – फिर आदमी आत्मा की दृष्टि से देखेगा अर्थात् जो विशेष ज्ञान से भरपूर है, जीवन और ज्योति से भरपूर है, जो हृदय में विद्यमान है, अन्त:करण की ज्योति में और सारे शरीर में विद्यमान है, वही आत्मा है। जब कहीं कुछ दिखाई नहीं देता तब आत्मा की ज्योति ही जीवन जगत को प्रकाशित करती है। जब आपको कहीं से कोई जवाब न मिले और परेशान हों कि क्या करना चाहिए एवं क्या नहीं करना चाहिए तब यहीं से पूछना, जवाब आपको मिल जाएगा कि ethical काम है या un-ethical.

रमेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक(वित्त), प्र.का.-कोलकाता

जातक कथा

बात उन दिनों की है जब दुनिया में आज की तरह पानी की सुविधा नहीं थी। लोगों को दूर जाकर नदी से पानी लाना होता था। किसी गाँव में एक गरीब किसान रहता था जो मेहनत मजदूरी करके अपना पेट भरता था। वह किसान रोजाना दूर किसी नदी से पानी लाया करता था। किसान रोज सुबह सूर्योदय से पहले ही उठता और अपने 2 घड़ों को एक डंडे में बांधता और डंडे को कंधे पर रख कर पानी लेने नदी की ओर चल देता।

किसान की पिछले कई सालों से यही दिनचर्या थी। किसान के उन दो घड़ों में से एक घड़ा फूटा हुआ था। किसान नदी से तो दोनों घड़े भर कर लाता लेकिन घर आते आते फूटे घड़े से आधा पानी रास्ते में ही गिर जाता था। घर आते आते किसान के पास सिर्फ डेढ़ घड़ा पानी ही बचता था। लेकिन किसान कभी भी इस बात को लेकर चिन्तित नहीं होता था।

फूटे घड़े को खुद में बहुत शर्मिंदगी महसूस होती थी कि बेचारा किसान सुबह उठकर दूर तक पैदल जाता है और मैं बदले में उसे क्या देता हूँ? उसकी आधी मेहनत खराब कर देता हूँ। वहीँ दूसरा घड़ा खुद पे गर्व महसूस करता था कि मैं पूरा पानी लेकर आता हूँ और अपने मालिक की मेहनत को बर्बाद नहीं होने देता।

रोजाना की तरह किसान एक सुबह जैसे ही दोनों घड़ों को ले जाने लगा, फूटा घड़ा बड़े ही करुण स्वर में बोला – हे मित्र! मैं खुद पर बहुत शर्मिंदा हूँ। तुम रोजाना कितनी मेहनत करते हो और मैं आधा पानी रास्ते में गिरा देता हूँ, मुझे क्षमा करें।

किसान भी घड़े की दशा देख कर बहुत दुखी हुआ उसने फूटे घड़े से कहा कि मित्र तुम दुखी ना हो, आज जब मैं पानी लेकर लौटूं तो तुम रास्ते में खिले सुन्दर फूलों को देखना।

ऐसा कह कर किसान ने डंडे को कंधे पर रखा और घड़ों में पानी लेने चल दिया। घड़े ने वैसे ही किया, उसने देखा कि पूरे रास्ते में रंग बिरंगे फूल खिले हुए थे लेकिन फूटा होने के कारण उसका पानी लगातार निकलता जा रहा था। घर वापस आते ही घड़ा फिर से किसान से माफ़ी माँगने लगा – मित्र मैंने एकबार फिर आपकी मेहनत पर पानी फेर दिया और केवल आधा घड़ा ही पानी ला सका।

किसान घड़े की बात सुनकर हंसा और बोला – मित्र शायद तुम ने ध्यान से उन फूलों को नहीं देखा। रास्ते में खिले हर फूल तुम्हीं को देखकर मुस्कुरा रहे थे। सबके चेहरे तुम्हारी तरफ ही खिले थे। जानते हो ऐसा क्यों ? क्यूंकि तुमने ही उन फूलों को जीवन दिया है। तुम्हारी ही बिखेरे पानी से वो फूल मुस्कुराते हुए बड़े हुए हैं। मैं जानता था कि तुम्हारा पानी बिखर जाता है इसलिए मैंने पूरे रास्ते में फूलों के बीज बो दिए थे।

शुभांजली चक्रवर्ती

पिता – श्री ए. चक्रवर्ती

उप महाप्रबंधक(का.एवं प्रशा.), प्र.का., कोलकाता

तवांग, एक खूबसूरत यात्रा

राजसी हिमालय की गोद में बिताए प्राकृतिक सौंदर्य, देहाती आकर्षण और शानदार क्षणों की भूमि तवांग, अरुणाचल प्रदेश की यात्रा का अनुभव शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। मैं तवांग के अपने अनुभव को यथासंभव साझा करने का प्रयास करुंगा। मैंने अप्रैल, 2019 में अपने परिवार के साथ अपनी यात्रा शुरु की। हमारी यात्रा कोलकाता से तवांग के बीच शुरु हुई। हमने कोलकाता एयरपोर्ट से गुवाहाटी एयरपोर्ट के लिए उड़ान भरी। गुवाहाटी से हमने तवांग के लिए एक कार किराए पर ली। यह एक लंबी और थका देने वाली यात्रा थी, लेकिन योग्य थी।

हमारी पहली मंजिल भालुकपोंग थी और जलवायु शानदार थी। हल्की हवा और खूबसूरत पहाड़ ताज़ा हो रहे थे। पहाड़ों की अनुभूति और सुंदरता के मनोरम दृश्य बहुत अच्छे थे। भालुकपोंग एक छोटा लेकिन मनोरम शहर है जो पश्चिम कामेंग में हिमालय के दक्षिणी छोर पर स्थित है। इस विलक्षण शहर के साथ चलने वाली खूबसूरत कामेंग नदी कई तरह के जंगली जानवरों का सहयोग करती है।

भालुकपोंग में हमारे रात भर रहने के बाद हम दिरांग चले गए और प्रसिद्ध कीवी वृक्षारोपण का दौरा किया। दिरांग में एक रात का अनुभव करना एक असाधारण अनुभव था क्योंकि हम वहां एक मठ, दिरांग मठ में रुके थे। इस मठ का जगह साफ–सफाई और दृश्य अकल्पनीय थे।

दिरांग के बाद हम रास्ते में सेला पास जाने वाले तवांग की ओर बढ़े। जब हम सेला पास पहुंचे तो बर्फीला मौसम खूबसूरत था। जगह बर्फ से ढकी थी। हमारी तवांग यात्रा में सबसे आकर्षक चीजों में से एक मौसम है जिसका हम स्वागत करते थे। यहाँ हल्की बारिश के साथ इस क्षेत्र में मिर्च मिल सकती है। जब हम तवांग पहुंचे तो बारिश हो रही थी। यहां दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध मठ है। यह विभिन्न पर्यटन स्थल जैसे तुरानंग फॉल्स, तवांग युद्ध स्मारक, पीटीएसओ झील और माधुरी झील दूर से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

अगले दिन हम बुमला दर्रे पर गए और अपने रास्ते में पीटीपसओ झील व माधुरी झील में रुक गए। यात्रा ने हमें सड़क के हरएक मोड़ पर हर घंटे और दिन के हर पल को आश्चर्यचकित कर दिया था। जब हम बुमला दर्रे तक पहँचे तो यह अन्य स्थानों के विपरीत धूप और हवा था। बुमला दर्रे से तवांग लौटने के रास्ते में बर्फबारी शुरु हो गई थी। वह अनुभव बहुत ही सुंदर रहा। हम तवांग के स्थानीय बाजार में कुछ स्मृति चिह्न एकत्र किए। हमने कुछ स्थानीय व्यंजनों का आनंद लिया और तवांग में कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों की यात्रा की।

अगले दिन हम लौटने वक्त एक रात बोमडिला मठ में रुके। मठ में रात बिताना एक शानदार अनुभव था। इस तरह हमारी खूबसूरत यात्रा समाप्त हो गई।

अमित कर्मकार

सहायक प्रबंधक(सू.प्रौ.), प्र.का., कोलकाता

लॉकडाउन

कभी सोचा ना था, ऐसा भी दिन आएगा
लोगों से मिलने की दिल तरस जाएगा
वो मंजर जो लोगों के साथ जिया,
वह कमरे में बैठकर याद आएगा
कोरोना ने ऐसा मचाया तहलका,
आया भूचाल जीवन में सबके
एक झटके में छीन लिया चैन और सुकून,
रूक गई जिदंगी और काम करने का जुनून
बंद हो गई मॉल सभी अब शॉपिंग का चक्कर नहीं।
बंद हो गए स्कूल सभी अब पढ़ने का टेंशन नहीं
करना है एकांत वास, अब समूह में रहना नहीं
जीवन है अनमोल इसलिए, मनमानी करना नहीं
वह स्कूल वह बच्चे, वह सभी याद आते हैं।
घर में बैठे–बैठे अब दिन भी ना कट पाते हैं।
और अंधेरा छाया प्रभु जी, इससे हमें बचाओ तुम।
जैसे द्वापर में आए थे, वैसे ही अब आओ तुम।
नीत करें यह प्रार्थना जीवन को बचाओ तुम।
दुविधा में यह विश्व खड़ा है, सबको राह दिखाओ तुम।

राजेद्र कुमार दास
सहायक प्रबंधक (वित्त), क्षे. का. गुवाहाटी

कल्पना

कल्पना करो तुम उस जहान की
जहां मौत ना हो किसी किसान की
बारिश बरसे सूरज चमके
और बात हो खेतों में उपजे धान की।

कल्पना करो तुम उस जहान की
जहां भूखी रात ना हो इंसान की
चूल्हा जला रोटी पके
और खुशियां परोसें थाली में हर जान की।

कल्पना करो तुम उस जहान की
जहां जंग में जीत हो नारी के सम्मान की
बिन दिए दहेज़ डोली उठे
और इससे इज़्ज़त बढ़े मर्दों के गिरेबान की।

कल्पना करो तुम उस जहान की
जहां क़िस्से ना हो क़त्ल–ए–आम की
फ़िक्र की कोई रात ना ठहरे
और बात हो हमारे हेजान की।

कल्पना करो तुम उस जहान की
जहां बहस ना हो हिंदू – मुसलमान की
मंदिर – मस्जिद साथ बने
और बात हो हमारे हिंदुस्तान की।

शिवम् रंजन ('शिव')
पिता–श्री आशुतोष कुमार, लेखाकार
फारबिसगंज आर.एल.डी, बिहार

कविता

मैंने हर रोज जमाने को रंग बदलते देखा है
उम्र के साथ जिंदगी के ढंग बदलते देखा है।।
वो जो चलते थे तो शेर के चलने का होता था गुमान
उनको भी पांव उठाने के लिए सहारे को तरसते देखा है।।

जिनकी नजरों की चमक देख सहम जाते थे लोग
उन्हीं नजरों को बरसात की तरह रोते देखा है।।
जिनके हाथों के जरा से इशारे से टूट जाते थे पत्थर
उन्हीं हाथों को पत्तों की तरह थरथर काँपते देखा है।।

जिनकी आवाज़ से कभी बिजली के कड़कने का होता था भरम
उनके होठों पर भी जबरन चुप्पी का ताला लगा देखा है।।

ये जवानी ये ताकत ये दौलत सब कुदरत की इनायत है
इनके रहते हुए भी इंसान को बेजान हुआ देखा है।।
अपने आज पर इतना ना इतराना मेरे यारों
वक्त की धारा में अच्छे-अच्छे को मजबूर हुआ देखा है।।
कर सको तो किसी को खुश करो दु:ख देते तो हजारों को देखा है।।

प्रशांत मुखर्जी
सुरक्षा अधिकारी, प्र.का., कोलकाता

संघर्ष

संघर्ष करके जिंदगी हो जायेगा सोना
ये है जहां कि रीत के कुछ खो के ही पाना
ये सच है प्यारे आज साथ ना है जमाना
संघर्ष सिखायेगा सबको अपना बनाना
संघर्ष कर, संघर्ष कर।

ये माना आज दूर है वो तेरी विजय
तु देख उनको जो हुए इतिहास में अजय
सीखा उन्होंने हार से भी हाथ मिलाना
संघर्ष करके जिंदगी हो जायेगा सोना
संघर्ष कर, संघर्ष कर।

ये जान ले दुनिया को तुझपे है टिकी नजर
केतू चलेगा या रुकेगा हार मानकर
ये तुझपे है दुनिया को तुझे क्या है दिखाना
संघर्ष करके जिंदगी हो जायेगा सोना
संघर्ष कर, संघर्ष कर।

शिखर से भी जरुरी है जान ये तेरा सफर
वक्त ना गंवा तु यूं ही सोच-सोच कर
कल की फिकर में देख आज को न भुलाना
संघर्ष करके जिंदगी हो जायेगा सोना
संघर्ष कर, संघर्ष कर।

तेरे दर्द में ही छुपी कहीं औरों की दवा
इस बात का एहसास समझो जब तुम्हें हुआ
तेरे करम का दुनिया भी गाएगी तराना
संघर्ष करके जिंदगी हो जायेगा सोना
संघर्ष कर, संघर्ष कर––––।

कृष्ण दास
बुलबुलचंडी डीपीसी, तुलसीहाटा आरएलडी

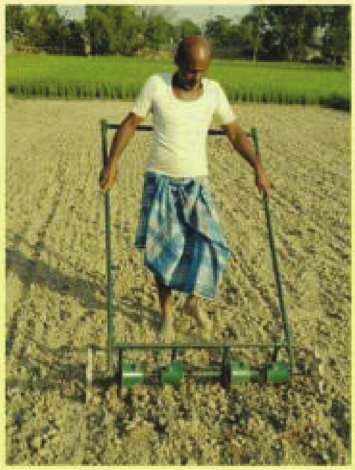

दिनांक 01 सितम्बर 2020 को प्रधान कार्यालय में राजभाषा पखवाड़ा का उद्घाटन करते हुए सर्वश्री अजय कुमार जॉली, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक एवं रमेश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक(वित्त)/राजभाषा अधिकारी।

दिनांक 14 अक्टूबर 2019 को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय(पूर्व क्षेत्र), कोलकाता की ओर से प्रधान कार्यालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण करते हुए श्री निर्मल कुमार दुबे, विभागाध्यक्ष(कार्या.) एवं निरीक्षण के दौरान उपस्थित इस कार्यालय के अधिकारीगण।

दिनांक 17 मार्च 2020 को प्रधान कार्यालय में सरोज गुप्ता केंसर सेंटर एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट, कोलकाता के प्रतिनिधि को सीएसआर क्रिया-कलाप के अंतर्गत चेक सौंपते हुए श्री अजय कुमार जॉली, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक एवं अन्य अधिकारीगण।

Printed by SKG Media, Kolkata 700017
Ph.: 033 4063 3318

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड
(भारत सरकार की संस्था)
15एन, नेली सेनगुप्ता सरणी, कलकाता -700 087